झरि लागै महलिया गगन घहराय

गुरुमाई चिद्विलासानन्द ने सन्त-कवि धर्मदास द्वारा लिखे इस भजन की संगीत-रचना राग मेघ मल्हार में की। यह राग वर्षा का आवाहन करता है। श्रीगुरुमाई को गाते हुए सुनें और यह मानसचित्रण करें कि ऑस्ट्रेलिया पर वर्षा के रूप में आशीर्वाद बरस रहे हैं।

ध्रुवपद

मेरा हृदयरूपी महल एक विस्तृत अन्तराकाश के मध्य स्थित है,

जहाँ वर्षा से भरे काले-घने बादल छा गए हैं।

पद १

मेघों की गर्जना और बिजली की चमक से अन्तराकाश हर क्षण भरता जा रहा है।

आनन्द की लहरें, एक के बाद एक उठती जा रही हैं : इसकी शोभा अकथनीय है!

पद २

अन्तराकाश के परम मौन में से अमृतवर्षा हो रही है,

और साधक प्रेमानन्द में स्नान कर रहा है।

पद ३

किवाड़ पूरे खुल गए हैं। अन्धकार मिट गया है।

धन्य हैं मेरे सद्गुरु जिन्होंने इस अद्भुत दृश्य को मेरे समाने प्रकट किया है।

पद ४

धर्मदास हाथ जोड़कर विनती करते हैं :

मैं सदा अपने सद्गुरु के चरण-कमलों में समाया रहूँ।

© २०२० एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।